

## संलेखना आत्महत्या नहीं है

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

आत्महत्या और अनशन ये दोनों भिन्न परिस्थितियां हैं। इनमें सबसे बड़ा अन्तर है उद्देश्य की विशुद्धि का। जो व्यक्ति परिस्थितियों से संतुष्ट होकर मरने की बात सोचता है उसकी परिणाम धारा संक्लिष्ट हो जाती है। वह आर्त ध्यान की प्रक्रिया से गुजरता है। उसका निर्णय और क्रियान्वयन आवेश की स्थिति में होता है। अनशन और आत्महत्या के नियामक तत्त्व भिन्न-भिन्न हैं। आत्महत्या के नियामक तत्त्व हैं— संक्षिप्त आदेश और आर्त ध्यान। अनशन के नियामक तत्त्व हैं— असंकलेश, शान्त चित्त और निर्मल ध्यान। जहां संक्लेश न हो, आवेश न हो और आर्त ध्यान न हो वहां अनशन की गरिमा स्वयं स्पष्ट हो जाती है। एक बीमार व्यक्ति अंतिम प्रवास ले रहा है। उसके जीवन के शेष क्षण बड़ी मुश्किल से कट रहे हैं। वह सुखपूर्वक मरने की इच्छा से आत्मघात का रास्ता स्वीकार करता है इसे भी अनशन नहीं कह सकते। अनशन का उद्देश्य मृत्यु नहीं होता। वह विशिष्ट लक्ष्य को सामने रखकर स्वीकार किया जाता है। मृत्यु तो उसका प्रासंगिक परिणाम है। इसलिए अनशन और आत्महत्या को एक तुला पर तोलना ठीक नहीं। जो विद्वान अनशन की आलोचना करते हैं वे मृत्यु जो कि यह घटना है उसे देखकर अपना मत प्रकट कर देते हैं। किसी भी सिद्धान्त का निर्णय केवल घटना के आधार पर नहीं होना चाहिए। हर घटना के पीछे रहे उद्देश्य प्रेरणा और प्रवृत्तियों का सूक्ष्म दृष्टि से आंकलन किये बिना किसी भी सिद्धान्त की आलोचना कर उसके साथ न्याय नहीं किया जा सकता। संलेखना जैन परम्परा सम्मत है, पर यह बात नहीं है कि जब चाहो अनशन कर दो। उसकी पृष्टिभूमि में मुख्य रूप से दो कार्य करते हैं। शरीर की उपयोगिता का अभाव और दूसरा अन्न के प्रति अरुचि। जैन आगमों में कहा गया है कि साधना के पथ पर चलने वाला व्यक्ति पग-पग पर दोषों से भय खाता हुआ, थोड़े से दोष को भी बहुत मानता चले। नये-नये गुणों की उपलब्धि हो तब तक जीवन को पोषण दें, जब वह न हो तब विचार-विमर्श पूर्वक इस शरीर का ध्वंस कर डाले। इस उद्देश्य के संदर्भ में ही

अनशन और तप का मूल्य है। आवेश और संक्लेश की स्थिति में किया गया अनशन, अनशन की कसौटी पर खरा नहीं उतर सकता।

जैन दर्शन के अनुसार जीवन का अन्तिम लक्ष्य है—आत्मा के सत्य स्वरूप की प्राप्ति। उस पर कर्मों के जो आवरण आये हुये हैं, उन्हें क्षीण करते हुये आत्मोत्थान की दिशा में बढ़ते जाना साधना की यात्रा है। सांसारिक कार्य जो देह से सधते हैं, वे तो प्रासंगिक हैं, आध्यात्मिक दृष्टि से देह का यथार्थ उपयोग, संवर तथा निर्जरामूलक धर्म का अनुसरण है। उपासक या साधक अपनी देह की परिपालना इसलिए करता है कि वह उसके अधिष्ठान में सहयोगी है। शरीर क्षीयमाण है। वृद्धावस्था में शरीर भारस्वरूप लगने लगता है। ऐसी दसा में जैन दर्शन साधक को एक मार्ग देता है—वह मार्ग है संलेषणा का। वृत्तिकार अभयदेव सूरी ने संलेषणा का अर्थ शरीर एवं कषायों को कृश करना किया है। उपासकदशांगसूत्र में संलेषणा—झूसणाराहणाए संलेखणा, जोषणा और आराधना तीन शब्द प्रुक्त हैं। जोषणा का अर्थ प्रीतिपूर्वक सेवन है। आराधना का अर्थ अनुसरण करना या जीवन में उतारना है अर्थात् संलेषणा व्रत का प्रसन्नतापूर्वक अनुसरण करना। उपासकदशांगसूत्र में इसके दो विशेषण दिए गए हैं—‘अपच्छिम—मारणंतिय’। अपश्चिम का अर्थ है अन्तिम या आखिरी, जिसके बाद इस जीवन में कुछ करना शेष न रह जाय। मरणान्तिक का अर्थ है—मरणपर्यन्त चलने वाली आराधना। इस व्रत में जीवन भर के लिये आहार त्याग तो होता ही है, साधक लौकिक, पारलौकिक कामनाओं को भी छोड़ देता है। तत्त्वार्थसूत्र में मरणकाल के उपस्थित होने पर प्रीतिपूर्वक नियम को संलेखना माना है। रत्नकरण्डकश्रावकाचार में उपसर्ग, दुर्भिक्ष, बुढ़ापा, रोग आदि व्याधियों के उपस्थित होने पर धर्म की रक्षा के लिए शरीर का परित्याग करने को संलेखना बताया है। संलेखना और समाधिमरण ये दोनों पर्यायवाची शब्द हैं। आचार्य उमास्वाति ने श्रावक और श्रमण दोनों के लिए संलेखना का प्रतिपादन किया है। आचार्य कुन्दकुन्द ने समाधिमरण श्रमण के लिए और संलेखना गृहस्थ के लिए माना है।

समाधिवरण श्रमण के लिए और संलेखना गृहस्थ के लिए है यह कथन समीचीन नहीं प्रतीत होता है, क्योंकि आगम साहित्य में अनेक श्रमणों के द्वारा संलेखना ग्रहण करने का प्रमाण समुपलब्ध है। इस प्रकार जिस श्रावक में आत्म रति व्याप्त हो जाती है वह जीवन और मृत्यु

की कामना से ऊपर उठ जाता है। न उसे जीवन की चाह रहती है और न मृत्यु से भय। सहज भाव से जब भी मौत आती है वह उसका शान्तिपूर्वक वरण करता है। संलेखना और आत्महत्या में शरीर त्याग समानरूप से है, पर शरीर को कौन, कैसे और क्यों छोड़ रहा है? यह महत्वपूर्ण बात है। आत्महत्या क्रोध, दुःख, शोक, मोह आदि उग्र मानसिक आवेगों में की जाती है, जिसे जीवन में कोई सहारा नहीं दिखता, जो जीवन से निराश हो जाता है, वह आत्महत्या करता है। यह व्यक्ति की कमजोरी और संकल्पशक्ति की कमी का परिचायक है। संलेखनापूर्वक आमरण अनशन आत्मा का हनन नहीं, उसका विकास है, उन्नयन और उत्थान है। इस स्थिति में साधक काम, क्रोध, राग द्वेष, मोह आदि से ऊपर उठ जाता है।